रामचंद्र शुक्ल

जन्म : 1884 (आश्विन पूर्णिमा, सं० 1941)।
निधन : 2 फरवरी 1941, काशी।
जन्म-स्थान : अगोना, जिला - बस्ती, उत्तर प्रदेश।
पिता : पं० चंद्रबली शुक्ल।
शिक्षा : ऐंग्लो संस्कृत जुबली स्कूल, मिर्जापुर से 1898 में उर्दू और अंग्रेजी के साथ मिडिल। लंदन मिशन स्कूल मिर्जापुर से 1901 में स्कूल की परीक्षा। कायस्थ पाठशाला, प्रयाग में इंटर में नामांकन, किंतु पढ़ाई अधूरी रही। स्वाध्याय द्वारा प्रभूत विद्यार्जन।
वृत्ति : 1904 में लंदन मिशन स्कूल में ड्राइंग टीचर। 1908 में 'काशी नागरी प्रचारिणी सभा' की परियोजना–'हिंदी शब्द सागर' में सहायक संपादक। धनार्जन के लिए अनुवाद आदि। 'नागरी प्रचारिणी सभा' पत्रिका का संपादन। 1921 से काशी हिंदू विश्वविद्यालय में अध्यापन, 1937 में हिंदी विभागाध्यक्ष, काशी हिंदू विश्वविद्यालय।
प्रमुख कृतियाँ : मधुस्रोत (कविता संग्रह), गोस्वामी तुलसीदास, जायसी ग्रंथावली की भूमिका, भ्रमरगीत सार, रस मीमांसा (सं० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र), त्रिवेणी (सं० कृष्णानंद) – (पाठालोचन और आलोचना)। हिंदी साहित्य का इतिहास (साहित्य का इतिहास), श्री राधाकृष्णदास की जीवनी (जीवनी), चिंतामणि, भाग-1, चिंतामणि, भाग-2 (सं० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र), चिंतामणि, भाग - 3 (डॉ० नामवर सिंह) - (सभी निबंध)। विश्वप्रपंच (लंबी भूमिका के साथ अनुवाद), कल्पना का आनंद, शशांक, बुद्धचरित (सभी अनुवाद)। अन्य कई अनुवाद, लेख, टिप्पणियाँ, विविध विषयक निबंध-प्रबंध पत्र-पत्रिकाओं में बिखरे।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल हिंदी साहित्य के महान आलोचक, इतिहासकार, निबंधकार और लेखक थे। इतिहास, आलोचना और निबंध के क्षेत्र में उनका अवदान युग प्रवर्तक और अप्रतिम है। हिंदी भाषा और साहित्य की, विशेष रूप से हिंदी आलोचना और चिंतन की, आधुनिक छवि और पहचान, मूलतः उनके द्वारा ही प्राप्त है। स्वभावतः समय के साथ-साथ उनका महत्त्व और अधिक बढ़ता तथा निखरता जा रहा है।

आचार्य शुक्ल ने ही हिंदी के सैद्धांतिक और व्यावहारिक साहित्य चिंतन को वैश्विक ऊँचाई, गहराई, व्यापकता और गंभीरता दी। उन्होंने साहित्य को जीवन-जगत की वास्तविकता और गतिशील यथार्थ के सान्निध्य तथा विकासधर्मी ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में रखते हुए विश्लेषित और परिभाषित किया। दर्शन, मनोविज्ञान, इतिहास और समाजशास्त्र का अपनी कल्पनाशील अंतर्दृष्टि में समाहार और विनियोग करते हुए उन्होंने भाषा-साहित्य की संपूर्ण परंपरा को युगानुरूप नई अर्थवत्ता से उद्भासित कर दिया। आचार्य शुक्ल

का साहित्य चिंतन पुस्तकों में शुरू होकर उन्हीं में समाप्त नहीं हो जाता । उनकी आलोचना किताबों से उठकर हमारे जीवन में आश्रय और सहभागिता चाहती है । आचार्य शुक्ल के साहित्य चिंतन और आलोचना का राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन, देश और समाज की अवस्थिति तथा दुनिया के पटल पर ज्ञान-विज्ञान के विकास से गहरा संबंध था । वे साहित्य को समय, समाज और परिवेश से प्रभावित मानते थे किंतु यह भी मानते थे कि साहित्य इन सबको उतना ही प्रभावित भी करता है ।

आचार्य शुक्ल की भाषा और विवेचन शैली गंभीर और प्रौढ़ है, किंतु उतनी ही ठेठ, सरल और बोधगम्य भी । लेखक और आलोचक होने के साथ-साथ वे हिंदी भाषा साहित्य के महान अध्यापक भी थे । यहाँ प्रस्तुत पाठ 'कविता की परख' 'चिंतामणि' भाग-3 से लिया गया है जिसे प्रख्यात आलोचक डॉ० नामवर सिंह ने 1983 में संपादित किया । 'कविता की परख' मूलतः हाई स्कूल के छात्रों के लिए लिखा गया निबंध है जो पहली बार आचार्य शुक्ल द्वारा स्कूल के छात्रों के लिए संपादित पुस्तक 'हिंदी गद्य चंद्रिका' में 1938 में प्रकाशित हुआ था । विशेष रूप से स्कूली छात्रों के लिए लिखे गए इस निबंध की आज भी उतनी ही सार्थकता और प्रासंगिकता है । कविता को परखने के बुनियादी साधन आज भी वे ही हैं जिनकी सीख आचार्य ने दी है । इन साधनों की आधारभूत सीख आज कहीं अधिक प्रासंगिक है ।

◆ ◆ ◆

"कविता वह साधना है जिसके द्वारा शेष सृष्टि के साथ मनुष्य के रागात्मक संबंध की रक्षा और निर्वाह होता है ।

कविता के द्वारा हम संसार के सुख-दुःख, आनंद और क्लेश आदि यथार्थ रूप से अनुभव करने में अभ्यस्त होते हैं जिससे हृदय की स्तब्धता हटती है और मनुष्यता आती है ।

कविता सृष्टि-सौंदर्य का अनुभव कराती है और मनुष्य को सुंदर वस्तुओं में अनुरक्त और कुत्सित वस्तुओं से विरक्त करती है ।"

(कविता क्या है)

–आचार्य रामचंद्र शुक्ल

कविता की परख

कविता का उद्देश्य हमारे हृदय पर प्रभाव डालना होता है, जिससें उसके भीतर प्रेम, आनंद, हास्य, करुणा, आश्चर्य इत्यादि अनेक भावों में से किसी का संचार हो । जिस पद्य में इस प्रकार प्रभाव डालने की शक्ति न हो, उसे कविता नहीं कह सकते । ऐसा प्रभाव उत्पन्न करने के लिए कविता पहले कुछ रूप और व्यापार हमारे मन में इस ढंग से खड़ा करती है कि हमें यह प्रतीत होने लगता है कि वे हमारे सामने उपस्थित हैं । जिस मानसिक शक्ति से कवि ऐसी वस्तुओं और व्यापारों की योजना करता है और हम अपने मन में उन्हें धारण करते हैं, वह कल्पना कहलाती है । इस शक्ति के बिना न तो अच्छी कविता ही हो सकती है, न उसका पूरा आनंद ही लिया जा सकता है । सृष्टि में हम देखते हैं कि भिन्न-भिन्न प्रकार की वस्तुओं को देखकर हमारे मन पर भिन्न-भिन्न प्रकार का प्रभाव पड़ता है । किसी सुंदर वस्तु को देखकर हम प्रफुल्ल हो जाते हैं, किसी अद्‌भुत वस्तु या व्यापार को देखकर आश्चर्यमग्न हो जाते हैं, किसी दुख के दारुण दृश्य को देखकर करुणा से आर्द्र हो जाते हैं । यही बात कविता में भी होती है ।

जिस भाव का उदय कवि को पाठक के मन में कराना होता है, उसी भाव को जगानेवाले रूप और व्यापार वह अपने वर्णन द्वारा पाठक के मन में लाता है । यदि सौंदर्य की भावना उत्पन्न करके मन को प्रफुल्ल और आह्लादित करना होता है तो कवि किसी सुंदर व्यक्ति अथवा किसी सुंदर और रमणीय स्थल का शब्दों द्वारा चित्रण करता है । सूरदासजी ने श्रीकृष्ण के अंग-प्रत्यंग का जो वर्णन किया है उसे पढ़कर या सुनकर मन सौंदर्य की भावना में लीन हो जाता है । गोस्वामी तुलसीदासजी की गीतावली में चित्रकूट का यह वर्णन कितनी सुंदरता हमारे समक्ष लाता है –

"सोहत स्याम जलद मृदु धोरत धातु-रंगमगे शृंगनि ।"

इसी प्रकार भय का भाव उत्पन्न करने के लिए कवि जो रूप सामने रखेगा वह बहुत ही विकराल होगा । जैसा कुंभकरण का रूप रामचरितमानस में है । राम के वन-गमन पर अयोध्या की दशा का जो वर्णन रामायण में है, उससे किसका हृदय दुख और करुणा का अनुभव न करेगा ?

अपने वर्णनों में कवि लोग उपमा आदि का भी सहारा लिया करते हैं । वे, जिस वस्तु के वर्णन का प्रसंग होता है, उस वस्तु के समान कुछ और वस्तुओं का उल्लेख भी किया करते हैं; जैसे – मुख को चंद्र या कमल के समान, नेत्रों को मीन, खंजन, कमल आदि के समान, प्रतापी या तेजस्वी को सूर्य के समान; कायर को शृगाल के समान, वीर और पराक्रमी को सिंह के समान

प्राय: कहा करते हैं । ऐसा कहने में उनका वास्तविंक लक्ष्य यही होता है कि जिस वस्तु का वे वर्णन कर रहे हैं, उसकी सुंदरता, कोमलता, मधुरता या उग्रता, कठोरता, भीषणता, वीरता, कायरता इत्यादि की भावना और तीव्र हो जाए । किसी के मुख की मधुरकांति की भावना उत्पन्न करने के लिए कवि उस मुख के साथ एक और अत्यंत मधुर कांतिवाला दूसरा पदार्थ–चंद्रमा भी रख देता है, जिससे मधुर कांति की भावना और भी बढ़ जाती है । सारांश यह कि उपमा का उद्देश्य भावना को तीव्र करना ही होता है, किसी वस्तु का बोध या परिज्ञान कराना नहीं । बोध या परिज्ञान कराने के लिए भी एक वस्तु को दूसरी वस्तु के समान कह देते हैं । जैसे–जिसने हारमोनियम बाजा न देखा हो उससे कहना, ''अजी ! वह संदूक के समान होता है ।'' पर इस प्रकार की समानता उपमा नहीं ।

कोई उपमा कैसी है, इसके निर्णय के लिए पहले तो यह देखा जाता है कि कवि किस वस्तु का वास्तव में वर्णन कर रहा है और उस वर्णन द्वारा उस वस्तु के संबंध में कैसी भावना उत्पन्न करना चाहता है । उसके पीछे इसका विचार होता है कि उपमा के लिए जो वस्तु लाई गई है, उससे वही भावना उत्पन्न होती है और बहुत अधिक परिमाण में, तो उपमा अच्छी कही जाती है । केवल आकार, छोटाई-बड़ाई आदि में ही समानता देखकर अच्छे कवि उपमा नहीं दिया करते । वे प्रभाव की समानता देखते हैं, जैसे यदि कोई आकार और बड़ाई को ही ध्यान रखकर आँख की उपमा बादाम या आम की फाँक से दे तो उसकी उपमा भद्दी होगी क्योंकि उक्त वस्तुओं से सौंदर्य की भावना वैसी नहीं जगती । कवि लोग आँख की उपमा के लिए कभी कमल-दल लाते हैं, जिससे रंग की मनोहरता, प्रफुल्लता, कोमलता आदि की भावना एक साथ उत्पन्न होती है; कभी मीन या खंजन लाते हैं, जिससे स्वच्छता और चंचलता प्रकट होती है, उठे हुए बादल के टुकड़े के ऊपर होते हुए पूर्ण चंद्रमा का दृश्य कितना रमणीय होता है ! यदि कोई उसे देखकर कहे कि 'मानो ऊँट की पीठ पर घंटा रखा है' तो यह उक्ति रमणीयता की भावना में कुछ भी योग न देगी, थोड़ा-बहुत कुतूहल चाहे भले ही उत्पन्न कर दे https://www.evidyarthi.in/

कवि लोग प्रेम, शोक, करुणा, आश्चर्य, भय, उत्साह इत्यादि भावों को पात्रों के मुँह से प्राय: प्रकट कराया करते हैं । वाणी के द्वारा मुनष्य के हृदय के भावों की पूर्ण रूप से व्यंजना हो सकती है । मनुष्य के मुख से प्रेम में कैसे वचन निकलते हैं, क्रोध में कैसे, शोक में कैसे, आश्चर्य में कैसे, उत्साह में कैसे इसका अनुभव सच्चे कवियों को पूरा-पूरा होता है । शोक के वेग में मनुष्य थोड़ी देर के लिए बुद्धि और विवेक भूल जाता है, उचित-अनुचित का ध्यान छोड़ देता है । इसी बात को दृष्टि में रखकर तुलसीदासजी ने लक्ष्मण के शक्ति लगने पर राम के मुँह से कहलाया है कि -

''जौ जनतेउँ बन बंधु-बिछोहू,
पिता वचन मनतेउँ नहिं ओहू''

जो काव्य के सिद्धांतों को नहीं जानते वे कहेंगे कि इस वचन से राम के चरित्र में दूषण आ गया । पर जो सहृदय और मर्मज्ञ हैं, वे इसे शोक की उक्ति मात्र समझेंगे ।

पात्र के मुख से भाव की व्यंजना कराने में कवि में बड़ी निपुणता अपेक्षित होती है । पहले तो उसे मनुष्य की सामान्य प्रकृति का ध्यान रखना पड़ता है, फिर पात्र के विशेष ढंग के स्वभाव का । इसी से एक ही भाव की व्यंजना अनंत प्रकार से हो सकती है । रामचरितमानस में देखिए कि राम जब कभी अपना क्रोध प्रकट करते हैं, तब किस संयम और गंभीरता के साथ, और लक्ष्मण किस अधीरता और उग्रता के साथ । यही बात उत्साह आदि और भावों के संबंध में भी समझनी चाहिए ।

□□□

अभ्यास

पाठ के साथ

1. कविता के क्या उद्देश्य हैं ?
2. कल्पना किसे कहते हैं ? एक कवि के लिए कल्पना का क्या महत्त्व है ?
3. उपमा क्या है ? कविता में उपमा का प्रयोग क्यों किया जाता है ? पाठ के आधार पर उत्तर दें ।
4. आँख के लिए मीन, खंजन और कमल की उपमाएँ दी जाती हैं । इनमें क्या-क्या समानताएँ हैं ?
5. 'मानो ऊँट की पीठ पर घंटा रखा है'—इस उक्ति के द्वारा लेखक ने क्या कहना चाहा है ?
6. ''जौ जनतेउँ बन बंधु बिछोहू
   पिता वचन मनतेउँ नहिं ओहू''—इस उदाहरण के द्वारा लेखक ने क्या कहना चाहा है ?
7. 'वाणी के द्वारा मनुष्य के हृदय के भावों की पूर्ण रूप से व्यंजना हो जाती है' । इस कथन का आशय स्पष्ट करें ।

पाठ के आस-पास

1. प्रस्तुत निबंध किस कोटि का है ? निबंधों के विभिन्न प्रकारों पर अपने शिक्षक से चर्चा करें ।
2. पाठ में सूरदास द्वारा श्रीकृष्ण के अंग-प्रत्यंग के वर्णन से सौंदर्य उत्पत्ति की चर्चा की गई है । ऐसे दो पदों का संग्रह करें और उन पदों के काव्य-सौंदर्य पर विचार करें ।
3. शुक्ल जी ने इस निबंध में राम-वन-गमन प्रसंग का उल्लेख किया है । तुलसीदास ने रामचरितमानस में राम-वन-गमन का बड़ा ही मार्मिक वर्णन किया है । उक्त प्रसंग का कक्षा में पाठ करें और उस अंश का अर्थ भी लिखें ।
4. आपके विचार से किसी कविता में कौन-कौन-सी चीजें होनी चाहिए ।

5. आलोचना के अतिरिक्त शुक्ल जी ने और क्या-क्या लिखा है ?
6. 'उनकी आलोचना किताबों से उठकर हमारे जीवन में आश्रय और सहभागिता चाहती है' लेखक परिचय के इस वाक्य की पुष्टि पाठ से करें ।

भाषा की बात

1. निम्नलिखित विशेष्यों के लिए उपयुक्त विशेषण दें –
   मुख, चरण, नेत्र, सूर्य, चंद्रमा, हवा, कमल
2. 'ता' प्रत्यय से इस पाठ में कई शब्द हैं, जैसे- निपुणता, गंभीरता आदि । ऐसे शब्दों को चुन कर लिखें ।
3. निम्नलिखित शब्दों से 'इक' प्रत्यय लगाकर शब्द बनाएँ –
   हृदय, करुणा, शब्द, मुख, प्रकृति, सिद्धांत, वास्तव, बुद्धि, मर्म, स्वभाव
4. पाठ से द्वंद्व समास के उदाहरण चुनें ।
5. निम्नलिखित शब्दों से विशेषण बनाएँ –
   माधुर्य, कांति, मुख, उपमा, वास्तव, रंग, रमणीयता, मानव
6. निम्नलिखित शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखें –
   उपस्थित, उदय, स्थल, कायर, बड़ाई, परिमाण, अधिक, उचित
7. निम्नलिखित शब्दों के संज्ञा रूप लिखें –
   हार्दिक, सुंदर, विकराल, पराक्रमी, वास्तविक, मधुर, उचित

शब्द निधि

उत्साह	:	खुशी, उमंग
करुणा	:	दया, वेदना
व्यापार	:	क्रिया, गतिविधि
दारुण	:	असहनीय
आह्लादित	:	प्रसन्न
प्रतापी	:	प्रभावशाली, पराक्रमी
निपुणता	:	दक्षता
उग्र	:	उत्तेजित
अधीरता	:	बेचैनी
परिज्ञान	:	विशिष्ट ज्ञान
बोध	:	समझ
प्रफुल्ल	:	प्रसन्न
आर्द्र	:	भींगा हुआ
रमणीय	:	सुंदर
समक्ष	:	सामने
विकराल	:	भयानक
शृगाल	:	सियार
कांति	:	चमक
व्यंजना	:	व्यक्त या प्रकट करना
खंजन	:	चंचल आँखों वाला विशिष्ट पक्षी
कुतूहल	:	अचरज, विस्मय
दूषण	:	दोष, कलंक
परिमाण	:	मात्रा